श्री अरविन्द (1872-1950)

- अरविन्द घोष का जन्म पश्चिम बंगाल के कोननगर में 15 अगस्त 1872 में हुआ था।
- 1910 में अप्रैल माह में उन्होंने 'पांडिचेरी' में अपना निवास बनाया। वो निवास 'आश्रम' का रूप ले लिया इसको देखरेख उनकी शिष्या - 'मीरा रिचर्ड' जी करने लगी जिसे 'आश्रम की माँ' कही जाने लगी।
- 5 दिसम्बर 1950 को उन्होंने अपनी जीवन लीला समाप्त की।
- श्री अरविन्द का दर्शन 'आध्यात्मवाद (Idealism) का एक उदाहरण प्रस्तुत करता है, क्योंकि 'सत्' के स्वरूप को वे आध्यात्मिक मानते हैं, तथा साथ ही एक 'चरम आदर्श' की भी कल्पना करते हैं जिसकी ओर पूर्ण मानव शक्ति के अग्रसर होने की अनुशंसा की गयी है। किन्तु उनका यह आदर्शवाद या आध्यात्मवाद न तो 'अमूर्त एकवाद' (Abstract Monism) के समान है और न एकेश्वरवाद (Theism) के समान है।
- श्री अरविन्द निषेधों के दो रूप बताते हैं —
  (1) जड़वादी निषेध (Materialistic Denial) तथा
  (2) वैराग्यमूलक अस्वीकृति (The refusal of the ascetic)

सत् का स्वरूप ✓ श्री अरविन्द (तत्वमीमांसीय सिद्धांत) सत् के स्वरूप के संबंध में भौतिकवादी एवं आध्यात्मवादी/आदर्शवादी दोनों सिद्धांतों को एकांगी मानते हैं तथा 'सत्' को दोनों का समन्वित करते हैं।

- ~~सत्~~ 'सत्-सच्चिदानन्द' उनके अनुसार सत् पूर्णतया आध्यात्मिक है, फिर भी 'सत्' में भौतिक के लिये स्थान है। ऐसा उनके 'ब्रह्म विचार' में पाते हैं। शंकर के ब्रह्म से भिन्न अरविन्द 'ब्रह्म' की व्याख्या करते हैं उनका कहना है कि यदि 'विश्व चेतना' का विश्लेषण करें तो एक ऐसा बिन्दु स्पष्ट होता है जहाँ 'आत्मा' के लिए जड़तत्व भी वास्तविक हो जाता है, तथा जड़तत्व के लिए 'आत्मा' भी वास्तविक है।
- श्री अरविन्द 'सत्' को जानने के लिए उसके विभिन्न स्तरों या गतियों (Levels or Grades of Being) की बात करते हैं लेकिन अरविन्द भी पूर्णसत् को 'एक' मानते हैं।

※ सत् अनिवार्यतः एक है यह 'अव्यक्त' रूप है तथा उसके विभिन्न रूप अभिव्यक्त रूप हैं।

- श्री अरविन्द सत्ता के आठ स्तरों की बात करते हैं -

उच्चतर / अवतरण ↓

(1) शुद्ध सत् (Pure Existence)
(2) चित् शक्ति (Consciousness-Force)
(3) आनन्द (Bliss)

} उच्चतर गोलार्द्ध

(4) अतिमानस (Supermind)

आरोहण ↑

(5) मानस (Mind)
(6) मन (Psyche)
(7) प्राण (Life) तथा
(8) जड़तत्व (Matter)

} निम्नतर गोलार्द्ध

- तथात्मक सत् में सच्चिदानन्द है, जिसके सत्, चित-शक्ति और आनन्द तीन रूप निहित हैं।

* सृष्टि का स्वरूप: विश्व प्रक्रिया

परमसत् की आह्लादपूर्ण अभिव्यक्ति 'सृष्टि' है।

- श्री अरविन्द सृष्टि का विचार द्विगुणात्मक-प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे हैं -

(1) एक तो परमतत्व का जगत् के रूप में अवतरण (Descent)
(2) दूसरी ओर यह जगत के रूपों का उच्चतर रूपों में आरोहण है उत्थान है (Ascent)।

विकास प्रक्रिया

- श्री अरविन्द के अनुसार 'अवतरण' तथा उत्थान की प्रक्रिया ही सृष्टि है। अतः उत्थान प्रक्रिया को अरविन्द विकास प्रक्रिया कहते हैं तथा अवतरण प्रक्रिया को अन्तर्वलन-प्रक्रिया (Involution) कहते हैं।

अवतरण (Descent) ↓ (अन्तर्वलनप्रक्रिया (Involution)

उत्थान (Ascent) ↑

* अवतरण या अन्तर्वलन (Descent or Involution) -

वेदान्त में सृष्टि को तत्त्वतः अविद्या से दिखाया है, जिसके परिणामस्वरूप सृष्टि को वास्तविकता का बोध होता है। अज्ञान या अविद्या के कारण हम जगत को वास्तविक समझ लेते हैं, यह एक प्रकार का भ्रम या लीला है।

सृष्टि आत्मा का अज्ञान में उतरना

- श्री अरविन्द भी इसी प्रकार का सृष्टि के संबंध में "आत्मा का अज्ञान में निमज्जन आत्मा का अज्ञान में प्रविष्ट हो जाना (Plunge of the Spirit into Ignorance) कहते हो।

- श्री अरविन्द के अनुसार सृष्टि अवास्तविक/भ्रामक नहीं है। इसकी अपनी सत्ता है इसका अपना स्थान है, और सत्य के साथ पूर्णतया संगत है।

* [illegible]

क्यों सृष्टि हुयी? उत्तर – लीला

कैसे सृष्टि हुयी? उत्तर – माया

- वेदान्त के समान अरविन्द मानते हैं कि सृष्टि आनन्द की अभिव्यक्ति है। सृष्टि आनन्द की लीला है।
- सच्चिदानन्द अपने को जगत रूप में व्यक्त करते हैं यही माया है। माया सच्चिदानन्द की शक्ति है।

* उत्थान अथवा विकास (Ascent of Evolution) -

विकास का अर्थ होता है निम्नतर का उच्चतर में विकसित होना और यह तभी संभव है जब उच्चतर का निम्नतर में अवतरण हो। सत्ता के आठों स्तरों के क्रम में ही दोनों प्रक्रियाएं चलती हैं। उच्चतर रूपों के जड़तत्व, प्राणतत्व, मन आदि में अवतरण से ही इन तत्वों का उच्चतर रूपों में विकास हो पाता है।

- उच्चतर सीढ़ी का चरम बिन्दु 'परमसत्' और यह अवतरण की सीढ़ी के प्रथम बिन्दु 'जड़तत्व' में है।
- इनके विकास सिद्धांत की विशिष्टता है कि अपने अन्तर्गत अन्य सभी प्रकार के विकास-सिद्धान्तों को समाविष्ट कर लेता है। विकास की प्रक्रिया को एक दृष्टि से पुनरावृत्तिमूलक (Repetitive) तथा उद्गमनात्मक (Emergent) कहा जाता है तो दूसरी दृष्टि से यन्त्रवादी (Mechanical) तथा प्रयोजनवादी (Teleological) कहा जाता है।

UGC-.. * अरविन्द के अनुसार विकास प्रक्रिया में तीन प्रक्रियाएं समाविष्ट हैं –

1. विस्तारण (Widening)
2. उच्चत्व की ओर उन्मुखता (Heightening)
3. पूर्णीकरण / समाकलन (Integration)

* पूर्णीकरण की प्रक्रिया विकास की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। अरविन्द के अनुसार पूर्णीकरण का अर्थ है – अवतरण के द्वारा उत्थान (Ascent through Descent) उच्चतर रूप निम्नतर रूपों में अवतरित होकर उनके स्वरूप में ही परिवर्तन कर देते हैं और उन सबको भी ऊपर उठा लेता है।